ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

हरिसुमन बिष्ट के कथा–साहित्य में चित्रित निम्न वर्ग।

मनोज जोशी
शोध छात्र
कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, उत्तराखण्ड

सारः– निम्न वर्ग का सम्बन्ध समाज में मजदूर, किसान और कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों से है। निम्न वर्ग हमेशा पूंजीवादी वर्ग के शोषण का शिकार होता रहा है। निम्न वर्ग को पूंजीवादी वर्ग हमेशा हेय और शोषण की दृष्टि से देखता है। निम्न वर्ग हमेशा वर्गीय समाज व्यवस्था में अभावग्रस्त और दाने–दाने का मोहताज रहा है। हरिसुमन बिष्ट ने अपने कथा–साहित्य में निम्न वर्ग के पात्रों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। हरिसुमन बिष्ट के कथा–साहित्य में दो तरह का निम्न वर्ग दिखाई देता है। प्रथम ग्रामीण परिवेश का निम्न वर्ग दूसरा महानगरीय परिवेश का निम्न वर्ग। लेखक ने इन दोनों निम्न वर्गों का यर्थाथ चित्रण बहुत ही सूक्ष्म रूप में किया है।

शब्दांशः– ग्रामीण, निम्न वर्ग, आर्थिक कठिनाई, शोषण।

(अ) ग्रामीण निम्न वर्ग ÷ ग्रामीण निम्न वर्ग के अन्तर्गत लेखक ने ग्रामों में निवास करने वाले अभावग्रस्त व शोषित निम्न वर्ग का चित्रण किया है। सफेद दाग, आग और अन्य कहानियां, मछरंगा, आसमान झुक रहा है, होना पहाड़ आदि कहानियों और उपन्यासों में ग्रामीण निम्न वर्ग का चित्रण किया है। मूलतः हरिसुमन ग्रामीण वास्तुविक्ता के समर्थ रचनाकार हैं। अतः स्वाभाविक है कि उनके साहित्य में ग्राम जीवंत हो उठा होगा। वस्तुतः गाँवों में गरीब वर्ग ही निवास करता है। ग्रामीण निम्न वर्ग के अन्तर्गत हमें निम्न लक्षण देखने को मिलते हैं।

(क) आर्थिक कठिनाइयां और उससे उत्पन्न संत्रास ÷ आर्थिक कठिनाई के कारण ही इस वर्ग को समाज में निम्न वर्ग का दर्जा दिया जाता है। इसी आर्थिक समस्या के तले वह जीवन भर दबा रहता है, जो उसके जीवन को एक संत्रास से युक्त बना देता है। हरिसुमन का ग्रामीण निम्न वर्ग बहुत ही आर्थिक समस्या से ग्रस्त दिखाई देता है। वह दो वक्त की रोटी के लिए भटकता दिखाई देता है। जो हमें निम्न रूप में दिखाई देता है।

'सफेद दाग' कहानी संग्रह के 'हिमकुण्ड' नामक कहानी में मनिया लोहार नामक ग्रामीण व्यक्ति के आर्थिक कठिनाई का चित्रण हुआ हैं । मनिया लोहार अपने लिए दो रोटी की व्यवस्था बहुत ही मेहनत करने के बाद कर पाता है। जो लेखक ने निम्न पंक्तियों के द्वारा व्यक्त किया है– ''मनिया इससे आगे कुछ नहीं कह पाया। क्या पता था कि एक छोटी सी बात इतनी बड़ी कयामत ले आयेगी। वह घबरा गया, ''ऐसी बात नहीं कहो ठकुराइन, मैं गरीब हूँ, दिन भर धौंकनी पर बैठता हूँ, तब कहीं पेट भर पाता हूँ। चन्द्रमणी को पता चल गया तो मेरी खैर नहीं रहेगी। भगवान के लिए इस बात को यही खत्म कर दो। इस नीचता पर मुझे क्षमा कर दो।''[1] 'तैश में आकर' नामक कहानी में लेखक ने मजदूर वर्ग व उनके परिवार की दयनीय स्थिति का चित्रण निम्न पंक्तियों के माध्यम से किया है–''क्या वसूल करूंगा ,इस कालोनी में सब लोगों का ठस्सा है। किस चीज की कमी है? कमी है उन मिट्टी ढोने वाले मजदूरों की जो औरत–बच्चों से रोज कमाते हैं ,रोज खाते हैं, बच्चे मिट्टी में पैदा होते हैं ,मिट्टी में पलते हैं, और जहां काम करते हैं बस, वही पर पसर भी जाते है।''[2] 'मछरंगा' नामक कहानी में लेखक ने एक ग्रामीण मजदूर युवती की आर्थिक कठिनाई का चित्रण किया है। नंदी नामक युवती के पास पहनने तक के लिए वस्त्र नहीं हैं। इस दयनीय स्थिति का चित्रण निम्न कहानी पंक्तियों में दिखाई देता हैं– ''एकाएक चेहरा भी फीका पड़ गया। वह सोचने लगी कि उसके पास तो सिर ढकने को तो सिर्फ यही एक धोती है। यह भी किसी से माँगी हुई । यदि यह मछलियों में सानी–मानी होकर तथा उसके वजन से तार तार हो गई तो सिर ढकना मुश्किल हो जायेगा। वह काफी देर तक सोचती रही और धोती का चिन्दी–चिन्दी होकर उड़ने का दृश्य उसकी आँखों में तैरने लगा।''[3] 'मछरंगा' कहानी में गरीब मजदूर नवयुवती नंदी किस प्रकार सड़क के काम में मजदूरी करती है। लेखक ने गांव में आर्थिक कठिनाइयों का चित्रण नंदी जैसी नवयुवती के माध्यम से किया है –''मैं सुबह की आयी इस वक्त तक इनके साथ खटती रही हूँ। मजदूर हूँ । हम लोग ही आपस में बांटकर नहीं खायेंगे तो क्या तुझे देंगे। चलो यह बात भी नहीं। आज तक मैं मजदूरी करने न आयी तो बिना मछलियों के हमारे हलक में सूखी रोटियां थोड़ी नहीं उतरीं। मैं पूछती हूँ–––' लेकिन उसके होंठ नहीं हिले।''[4] 'मछरंगा' कहानी में निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाई व उससे उत्पन्न संत्रास को लेखक ने बाल मजदूर नन्दी के द्वारा बयां किया है। एक बच्ची का मजदूरी पर जाना ग्रामीण निम्न वर्ग की विवशता को निम्न पंक्तियां बयां करती हैं– ''मजदूरी पर जाने का नंदी का वह पहला दिन था। उम्र ही क्या थी, अभी तो खाने–पीने और खेलने के दिन थे। छोटी ही उम्र में पिता का साया उठ गया था। इसलिए तो बूढ़ी माँ का पेट भरने के लिए बेलचा, फावड़ा और कस्सी थामने पड़े थे। माँ के दिल में अनेकों संशय जन्म ले रहे थे। कहीं हाथ में छाले न उभर आये हो, कहीं पाँव पर कस्सी न आने लगी हो। माँ दुःखी हो रही थी। दिनभर में अन्न मुँह न छुआया था। इकलौती लड़की को मजदूरी पर भेजना उसे उचित न लगा था।''[5] 'आग व अन्य कहानियॉ' कहानी संग्रह के 'उसकी कहानी' नामक कहानी में हरिसुमन बिष्ट ने गरीब निम्न वर्ग को उच्च वर्ग द्वारा किस प्रकार हमेशा शोषित किया जाता है। उसका चित्रण निम्न पंक्तियों के माध्यम

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

से किया है–''––––– मगर ऐसा भी नहीं है–यह तो सच है न कि गरीब को हमेशा आधा नंगा ही रहना होता है। यदि कभी उसने पूरा तन ढकने की कोशिश की तो बस सबकी नजरें टिक जाती उस पर दर्जनों सवाल उभर उठते हैं– कहां से आयी, कैसे आयी और क्यों आयी?''[6] 'आग' नामक कहानी में लेखक ने एक अनाथ बच्चे की आर्थिक कठिनाई का मार्मिक चित्रण किया है जो निम्न पंक्तियों में व्यक्त हुआ है–''दीदी के गांव में एक सरकारी स्कूल था। औरों की देखादेखी दीदी ने मुझे भी स्कूल में भर्ती करा दिया। अन्य बच्चों की तरह मैं भी स्कूल जाने लगा था। न तख्ती थी न कलम–दवात और न पहनने को कपड़ा। जिस दिन स्कूल नहीं लगता था। उस दिन में मजदूरी करने जाता था। मेरी अनाथ स्थिति पर सबको दया आती थी । पर दीदी के गांव के सभी लोग गरीब थे। किसी की स्थिति सुधरी नहीं थी।''[7] 'आग' नामक कहानी में लेखक ने गरीब निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाई का चित्रण करते हुए उस निम्न वर्ग के पेट की आग बुझाने की विवशता का वर्णन निम्न कहानी पंक्तियों के माध्यम से किया है– ''भले ही शाम को एक टुकड़ा मिले, चाहे न मिले। दिन ढ़लने तक, खेतों में खटने पर शाम को आधा शेर जुआर मिलता था। उन दिनों ज्वहार के दाने आज की तरह सफेद रंग के नहीं होते थे। उसका रंग लाल होता था। कई दिन तो लाल ज्वहार भी नसीब नहीं होती थी। उसके बदले में एक माणा (तौल का पैमाना) 'मडुवा' (पहाड़ों पर पैदा होने वाला अनाज) या 'झुडरा' (मादिरा) मिलता था। उससे पेट भरता नहीं था। पेट भर खाने की इच्छा किसकी नहीं होगी भला। पर्याप्त होता तो खा लेते वरना मन को मारकर, जानवरों का कच्चा मांस खाकर ही गुजारा करना पड़ता था।''[8]

'आग' नामक कहानी में लेखक ने भोलू की दीदी के परिवार को दो वक्त की रोटी उपलब्ध न हो पाने का चित्रण करते हुए उस परिवार की आर्थिक कठिनाई का चित्रण निम्न कहानी पंक्तियों में हुआ है– ''––– उसका भी कहना है, '' सच भी हो सकती है भोलू यह बात। उन्हें तो जिन्दगी भर पेट सड़ा–गला भी नसीब नही हुआ था। कभी मिला भी तो तेरी ही तरह आनाकानी करते थे। मैं उन्हें कहती जैसा मिलता है उसे खा लेना चाहिए। पेट की आग बुझाने से मतलब है। लेकिन उसकी आग कभी नहीं बुझी। शायद अब पेट भर खाना चाहते हों।''[9] 'मजदूरी' नामक कहानी में निम्न वर्गीय मजदूर कालीचरण की आर्थिक कठिनाई का चित्रण हुआ है। किस प्रकार वह लोगों के खेतों में काम करता था। और दो रोटी के लिए दर–दर भटकता था। यह सब का चित्रण करते हुए लेखक ने उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग के शोषण करने की प्रवृत्ति को भी निम्न पंक्तियों के माध्यम से चित्रित किया है– ''––– बेचारा कालीचरण जीवन भर मेरे दादाजी 'ठाकुर साहब' की खेती–बाड़ी में मरता–खटता रहा। कभी चैन की सांस लेते नहीं देखा मैंने उसे। दादा जी ने भी उसे उस हालत में देखा जब वह पेट की आग बुझाने के लिए दर–दर भटकता रहा था। उसकी हालत पर रहम कर काम पर रख लिया था। बेचारे ने बहुत कम मजदूरी मांगी थी। दरअसल उसने जो मांगा था उससे ज्यादा ही दिया जाना चाहिए था। लेकिन दादाजी ने उसमें भी कमी कर दी थी।''[10] 'बिजुका' कहानी संग्रह के 'लूला' नामक कहानी में किस प्रकार परिवार की आर्थिक कठिनाई के कारण एक निम्न वर्ग का स्वस्थ बच्चा बीमारी की चपेट में आने के कारण अपाहिज हो जाता है। इसी निम्न वर्ग की आर्थिक समस्या एवं संत्रास का चित्रण लेखक ने निम्न पंक्तियों में किया है–''जब वह एकांत में सोचता है तो मन के उचाटपन में खुद से ही कहने लगता है–मैं जन्म से लूला नहीं हूँ, अपाहिज नहीं हूँ। बचपन में एक बार बीमार हुआ था। माँ–बाप गरीब थे। मेरा इलाज गाँव में नहीं कर सके। काश तब में इस शहर में जन्मा होता––– ।''[11] 'आसमान झुक रहा है' उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण निम्न वर्गीय किसान 'चन्दन' की आर्थिक समस्या का वर्णन करते हुए, साथ में अन्य ग्रामीण किसानों की वास्तविकता का चित्रण निम्न उपन्यास पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त किया है – ''हैसियत ही क्या होती है पहाड़ी किसानों की, एक पतली–दुबली दुखयारी औरत, काली–मोटी बेडौल भैंस या एक दुधारी गाय और सुन्दर नागौरी सींगों वाले बैलों की एक जोड़ी, बस!''[12]

''आसमान झुक रहा है' उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण निम्न वर्गीय किसान पुत्र 'भोलू' की आर्थिक कठिनाई का चित्रण किया है। भोलू मजदूरी के लिए भटकता रहता है और उसे काम नहीं मिल पाता। इसी आर्थिक तंगी के कारण उसके द्वारा पहाड़ की भूमि को निष्ठुर बताना निर्धनता से उत्पन्न संत्रास को बयां निम्न उपन्यास पंक्तियां करती हैं–'' काका, क्या कच्चा और क्या पक्का जैसा उन्होंने कहा मैंने बता दिया। मैं तंग आ चुका हूँ। घर बैठे–बैठे घुटन होने लगी है। काम मिल जाय तो जी लगा रहेगा। भगवान ने ऐसी निष्ठुर भूमि में न जाने क्यों जनमा? जहां न पेट भरता है, और न प्यास बुझती है।''[13] 'आसमान झुक रहा है' उपन्यास में जब चंदन शहर की शोषण भरी नौकरी को छोड़कर गोपाल सिंह को ताने देने लगा तब गोपाल सिंह नामक निम्न वर्गीय ग्रामीण व्यक्ति चंदन से पहाड़ पर आर्थिक कठिनाई का वर्णन करते हुए अपने संत्रास को निम्न पंक्तियों के माध्यम से अभिव्यक्त करता हुआ कहता है– ''बड़बौज्यू बौखला उठे, ''मेरी हंसी करने के लिए ही तू आया मेरे साथ। तूने अभी दुनिया नहीं देखी, समझे''। फिर एकाएक शान्त स्वर में बोले, ''पहाड़ पर रहने की इच्छा किसकी नहीं होती। मेरी भी होती है और दूसरों की भी। मैं पूछता हूँ तुझसे–उन पहाड़ों को घूरने से तो पेट नहीं भर सकता। वहां की मिट्टी–पत्थर को चबाया तो नहीं जा सकता है।''[14] 'आसमान झुक रहा है' उपन्यास में निम्न वर्गीय किसान 'चंदन' की आर्थिक समस्या व उससे उत्पन्न संत्रास को लेखक ने निम्न पंक्तियों के द्वारा उजागर किया है–''अभी दो दाने अनाज के बखारी में हैं–जैसे–तैसे पेट का पूरा हो रहा है। करजा देगा भी कौन? पहले की देनदारी कम नहीं। यह सोचते हुए चंदन को लगा, वह 'भैराड़ की खाई' में जा चुका है। गुसेंदास उसकी लाश को मिट्टी–पत्थरों से दबा रहा हैं। बड़े–बड़े पत्थर उसको अपने ऊपर गिरते पड़ते–पड़ते लगे। उसे सांस रूकती लगी।––– गांव के हर परिवार की देहली पर उसने स्वयं को दोनों हाथ फैलाये एक दीन दुखी भिखारी की भाँति घूमता, खड़ा और कहता पाया, ''सौ पचास रूपये दे दो भाई! मुझे अपनी औरत का छल पूजना है। छल के प्रकोप से वह मरी जा रही है। सौ–पचास नहीं हो सकते तो दस–बीस ही दे दो। इतना भी नही तो अठन्नी, रूप्या दे दो।''[15] 'आसमान झुक रहा है' उपन्यास में चंदन नामक निम्न वर्गीय व्यक्ति की आर्थिक दुर्दशा का पता तब चलता है जब उसकी पत्नी बीमार हो जाती है। और पत्नी के इलाज के लिए उसे कर्ज तक नहीं मिलता। इसी आर्थिक

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

कठिनाई में चंदन आँसू बहाने को मजबूर हो जाता है। इसी आर्थिक तंगी का चित्रण लेखक ने निम्न उपन्यास पंक्तियों के द्वारा किया है– '' चन्दन ने अभी रोटी का पहला कौर तोड़कर मुँह में रखा ही था कि उसकी जोर–जोर से सिसकियां छूट पड़ी। हाथ की अंगुलियों पर उठाया दूसरा कौर थाली में गिर पड़ा। मन हुआ कि वह फूटफूट कर रोये और दिल में बंधी पीड़ा की गांठ को उगल दे। मगर वह कुछ कहता, उससे पहले धीरज देती हंसुली देवी ने ठण्डे पानी का लोटा थमा दिया और शांत स्वर में बोली, दिल छोटा मत करो। जीवन में सुख दुख लगा ही रहता है।सुख हमें चाहिए तो दुःख के भोगी भी हम ही होंगे। गांव में दो एक लोगों से पूछ लो। कोई दे देता रूपये तो ठीक, सूद पर भी देता है तो ले लो– अगली मिरच की फसल पर चुकता कर देंगे।''[16]

'होना पहाड़' उपन्यास में निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाई का पता तब चलता है जब शेखर की माँ उसकी पढ़ाई को जारी रखने के लिए अपने गहने तक बेच देती है। इसी निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाई का चित्रण लेखक ने निम्न उपन्यास पंक्तियों के माध्यम से किया है– ''यह आज कोई नयी बात नहीं है, बीसियों बार उसने मुझे–चार वर्ष पहले की बात है। शेखर की बोर्ड की परीक्षाएं थी। स्कूल में फीस भरना जरूरी था, घर में एक फूटी कौड़ी नहीं थी, दूर–दूर तक नजर दौड़ाई ,रूपयों का पेड़ नहीं दिखा, पेड़ जैसे सूख गये थे, सूखे पत्ते हवा के तेज झोके के साथ झड़ कर उड़ गये थे और में उन पत्तों को समेटना चाहता था– लेकिन हवा उन्हें मुझसे दूर बहुत दूर ले जाती। और मैं पूरी तरह टूट गया। शेखर का भविष्य जैसे चरमराने लगा सूखे पत्तों की तरह। चंद्रा तू सचमुच चांदनी है–स्वच्छ निर्मल। अपने कर्णफूल गिरवी रख आयी। शेखर की फीस दी और वह परीक्षा में पास भी हो गया।––– शेखर हर साल पास होता गया, कागज–पेंसिल और उसकी फीस बढ़ती गयी, क्या बताऊँ बेटे उसने मुझे आज तक नही बताया। उसने अपने सुहाग के यादों की सभी बेशकीमती चीजें बेच दी हैं।''[17]

(ख) अंधविश्वास,धर्मान्धता एंव रूढ़िवादिता ÷ निम्न वर्ग में शिक्षा का अभाव पाया जाता है। इसी शिक्षा के अभाव में वे लोग अंधविश्वासी और रूढ़िवादिता के शिकार अधिक होते हैं। हरिसुमन ने अपने कथा–साहित्य में निम्न वर्ग में प्रचलित अंधविश्वास व रूढ़िवादिता का चित्रण भी किया है। 'आग' नामक कहानी में मृत आत्मा द्वारा अन्य जीवों को हर लेना या खा लेने का विश्वास गांव के निम्न वर्गीय बुजुर्गों के अंधविश्वासी और रूढ़िवादी होने को दर्शाता है–''–––दो साल पहले की बात है। दीदी के अंतस में एक दिन ऐसा ही बवण्डर उठा था। उस दीदी ने बताया था कि 'सयांणज्यू' के बैल को मेरे 'भिनज्यू' (जीजा) की आत्मा ने खा लिया, लोग कहते हैं।''[18] 'आग' नामक कहानी में आत्मा–परमात्मा के विषय में अज्ञानता व भूत–पिशाच के प्रति विश्वास का भाव ग्रामीण निम्न वर्ग में प्रचलित रूढ़िवादिता को प्रदर्शित करता है, जो निम्न कहानी पंक्तियों में दृष्टव्य होता है–''हमारे वेद–पुराणों में ठीक ही लिखा है भगवान ने, आत्मा कभी नहीं मरती है, आदमी का शरीर मरता है। आत्मा तो चक्कर काटती रहती है उसी समय से। चौरासी लाख 'जूनियों (योनियों) में काई भी एक 'जूनि' धारण कर ले इसमें 'टैम' तो लगता है, तब तक वह इधर–उधर भटकती रहती है। कभी–कभी भूत भी बन जाती है कभी कुछ और। फिर वह आने–जाने वाले, राह चलने वाले को खा जाती है।''[19] 'ममता' उपन्यास में 'कान्ता' नामक पात्र द्वारा बिल्ली द्वारा रास्ता काटना, उल्लू का बोलना, लुहारिन के बेटे का छींकने को अपशकुन मानना उसके अंधविश्वासी व रूढ़िवादी होने को प्रदर्शित करता है, जो निम्न पंक्तियों में प्रदर्शित हुआ है–'' ––– गाड़ी प्लेटफार्म से लगभग पचास मीटर दूर खिसक गयी थी। हाय राम! यह क्या हुआ, अब मैं किधर जाऊं क्या आज ही बिल्ली ने रास्ता क्रास करना था? क्या आज ही घड़ी आध घड़ी उल्लू ने बोलना था ? क्या उस लुहारिन के बेटे ने आज ही छींक मारनी थी ? काश! आज यह सब अपशकुन होना था, जो में माँ के द्वार पर अपनी व्यथा नहीं सुना सकी मैं जाऊँगी, अवश्य जाऊँगी उस कुलछिनी का हाल जरूर सुनाऊँगी कि वह प्रेम की कैसी दिवानी है।''[20]

'ममता' उपन्यास में 'कान्ता' द्वारा अपनी सौत 'शान्ता' के लिए देवी के मंदिर में घात डालना और उसकी मृत्यु की कामना करना तथा मौत होने पर फूलों की चादर एवं बकरे की बलि चढ़ाने का प्रण करना, कान्ता जैसी निम्न वर्गीय स्त्री का अंधविश्वासी और धर्मान्ध होने को दर्शाता है–'' हे! देवी मेरी सौत की मृत्यु हो जायेगी, मेरा दुखी मन सुखी हो जाएगा तो मै तुझे फूलों की चादर और बकरे की बलि चढ़ाऊँगी।''क्या पत्थर की बनी यह मूर्ति इस काल घात को सुन सकती है, यह अपने–अपने सामाजिक विश्वास है।''[21] 'ममता' उपन्यास में विवाहिता कन्या का घर में रहना कुल कलंक मानना निम्न वर्ग के अंधविश्वासी व धर्मान्ध होने को दर्शाता है, जो लेखक ने निम्न पंक्तियों के द्वारा अभिव्यक्त किया है–'' इधर ममता को रोग ने त्यागा तो उधर प्रेम के दिल में विवाहिता की चिंगारी सुलगने लगी। विवाहिता कन्या का घर में रहना भी कुल कलंक था। कुछ दिन एकान्त जीवन–यापन करने की आदि ममता पिता की सेवा करती उसी में अपना कल्याण समझती थी।''[22] 'आसमान झुक रहा है' उपन्यास में ग्रामीण लोगों द्वारा शिल्पकार वर्ग को गाय–भैंस का दूध देने से अपवित्र हो जाने का विश्वास उनके रूढ़िवादिता को दर्शाता है–'' दरअसल इस गांव के लोग हरिजनों को अपनी गाय–भैंस का दूध भी नहीं देते थे। उनका मानना था कि हरिजनों को दूध–दही देने पर मवेशियां अपवित्र हो जाती है; उनमें बरकत नहीं होती।''[23]

(आ) महानगरीय निम्न वर्ग ÷ हरिसुमन बिष्ट ने ग्रामीण क्षेत्रों के निम्न वर्ग के साथ–साथ महानगरों में निवास करने वाले निम्न मजदूर वर्ग का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। बसेरा उपन्यास में नेाएडा सेक्टर के ऊँची–ऊँची हवेलियों के गन्दे नाले के किनारे बसे बंगाल, बांग्लादेश, उड़ीसा, बिहार आदि क्षेत्रों से दो वक्त की रोटी कमाने आए निर्धन निम्न वर्ग का चित्रण किया है, जिनके परिजन उन ऊँची

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

कोठियों के लोंगों के घरों में काम करते हैं। उन कोठी वालों द्वारा किस प्रकार उनके श्रम एवं तन का शोषण किया जाता है वह लेखक ने बड़े ही सजीवता से उजागर किया है।

(क) आर्थिक कठिनाइयाँ और उससे उत्पन्न संत्रास ÷ 'बसेरा' उपन्यास में नोएडा शहर के बसने पर गांव के लोगों का आर्थिक स्तर सुधारने के लिए खुशी मनाना यह दर्शाता है कि उनकी आर्थिक कठिनाई दूर होगी, रोजगार मिलेगा जिससे पेट भरने के लिए दो रोटी मिलेगी। शहर के निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाई का चित्रण लेखक ने निम्न पंक्तियों के द्वारा किया है–'' नोएडा के बसने के साथ उनकी खुशी बांसों उछलने लगी। उन्हें रोजगार मिलेगा तो आमदनी बढ़ेगी। आमदनी से पेट भर खाना मिलेगा, यह खुशी उनकी जीवित रहने की खुशी थी। वे लोग बातों ही बातों में ग्राम प्रधान को कह देते ''भाग एक रजिस्टर में नाम दर्ज नहीं करोगे तो काई बात नहीं, जब शहर बसेगा तो हर आदमी अपनी मेहनत करेगा, उसका पेट भरेगा। भरपेट होने पर अपनी नींद तो सो सकेगा गांव में।''[24] 'बसेरा' उपन्यास में नोएडा शहर के मजदूर वर्ग की दयनीय दशा का चित्रण लेखक ने निम्न पंक्तियों के माध्यम से किया है–'' वह भी गीता की तरह सेक्टर की कई कोठियों ,फ्लैटों में बर्तन झाड़ू–पोंछा करती है, महीने के आखिर में क्या मिलता है–जितना काम करेगी, उतना ही पाएगी। हजार–बारह सौ की आमद हो गई तो बल्ले–बल्ले, घर का दो जून का खाना भरपेट न सही, जीवित रहने को हो ही जाता है, बस।''[25]

'बसेरा' उपन्यास में निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाई का चित्रण करते हुए निम्न वर्ग के बच्चों की दयनीय दशा का चित्रण निम्न उपन्यास पंक्तियों के द्वारा किया गया है–'' उसने अपने को संभाला और जशोदा कौ धैर्य और हिम्मत दिलाते हुए कहा, ''दिल छोटा मत कर, अंधेरे में बच्चे मिले हैं कभी । सुबह होगी, लौट आएंगे। यहीं कही होंगे। यहां नहीं लेटे कहीं और होंगे। उन्हें टाट–बिछावन की जरूरत तो कभी नही रही। सुबह लौट आएंगे तो देखेंगे।''[26] 'बसेरा' उपन्यास में जदो सरकार द्वारा मौलाना साहब से यह कहना कि जिस दिन रिक्शे से कमाई नहीं होती उस दिन बच्चों को भूखा पेट सुला देता हूँ। यह निम्न वर्गीय जदो सरकार की आर्थिक कठिनाई के करण उत्पन्न संत्रास को भी बयां करता है, जो निम्न उपन्यास पंक्तियों में चित्रित हुआ है– ''क्या करें कोई मौलाना! पुगराई गाय की लात से डरेंगे तो बच्चा लोग खाएगा क्या ? यही बात कई–कई दफा जशोदा को कही है। ये बातें वह समझती नहीं रूठ जाती है। मौलाना जिस दिन सवारी नहीं मिलती तो समय से पहले बच्चों को सुला देता हूँ, चूल्हा जले भी तो कैसे''?[27] 'बसेरा' उपन्यास में शहरी निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाई एवं उस निर्धनता से उत्पन्न संत्रास को लेखक ने रिक्शा चालक जदो सरकार के माध्यम से निम्न उपन्यास पंक्तियों के द्वारा से व्यक्त किया है– ''जदो सरकार का हाथ यकायक अपने लंबे कुर्ते की जेब में चला गया। जेब के तले से उंगलियां नंगी जांघों को छू गई। जेब में रखने को कुछ बचता तो उसे छेद को सी लेने की याद रहती, मगर ऐसा कभी नहीं हुआ कि दो–चार रूपये बच गए होते, उन्हें जेब में संभालने की जरूरत पड़ी थी। मन विचलित हो उठा, चेहरा स्याह पड़ गया। उसे लगा उसकी खुशी को स्वयं की नजर लग गई है। अमूमन जशोदा को देर से घर लौटते देखकर उसे बच्चे का आवारा घूमते रहना अच्छा नहीं लगता था।''[28] 'बसेरा' उपन्यास में नोएडा महानगर के निम्न वर्ग के परिवार की आर्थिक कठिनाई का चित्रण करते हुए लेखक ने गरीब परिवार के बच्चों का उच्च वर्ग के घरों में काम करने का वर्णन भी किया है। निम्न वर्ग के लोगों की मृत्यु हो जाने पर चील, कौआ द्वारा नोचकर खाने का चित्रण कर लेखक ने मानवता को शर्मसार करने वाली स्थिति का चित्रण निम्न पंक्तियों के माध्यम से प्रकट किया है–''एक बात कहूँ साहब! मेरा मन कहीं से भी नहीं मानता। ये मन है न इसे कैसे समझाऊँ कि जो अपने प्रिय होते हैं, उनसे बात मन ही मन में होती रहती है। फिर भी मन उड़ता रहता है। हमारे बच्चे कहीं मर–खप गए होंगे। वे जीवित होंगे जरूर, मर गए होते तो चील–कौआ आसमान में घूमते दिख जाते और कुत्ते–––'' जदो सरकार ने अपने विश्वास को मजबूती के साथ रखा।''[29]

'बसेरा' उपन्यास में लेखक ने नोएडा महानगर के निम्न वर्गीय रिक्शा चालक 'रसूल मियां' नामक व्यक्ति की आर्थिक कठिनाई का चित्रण निम्न उपन्यास पंक्तियों के द्वारा प्रकट किया है–''एक गहरी खामोशी। एक हाथ से दूसरे हाथ को कुछ करते नहीं बन रहा था। रसूल लौट आया। उसके जैसे और ताकतवर लौट आए, जो दिन भर रिक्शा खींचते थे, सेक्टर के बच्चों को स्कूल छोड़ने और वापस लाने के बाद कहीं दूर की सवारी उठा लेते। जितनी दूरी की सवारी मिलती, भाड़ा उसी रूप में जेब में आ जाता था। इन लोगों की हरदम कोशिश रहती थी कि रिक्शा ढीए पर खड़ा न रहे, चलता रहे। गोया रिक्शा समय हो, जीवंत हो, रिक्शा एक लौह–लकड़ी का बना तिपहिया वाहन नहीं था, वह उनकी जिदंगी था, जिसमें उनके प्राण बसते थे। उसकी हिफाजत भी वे लोग वैसी ही करते थे। बस रिक्शा चलते रहे, जीवन चलता रहे।''[30] 'बसेरा' उपन्यास में महानगरीय निम्न वर्गीय 'रसूल मियां और शबाना' की आर्थिक कठिनाई एवं दयनीय दशा का चित्रण लेखक ने निम्न उपन्यास पंक्तियों के माध्यम से किया है–''खाने को क्या दूं– झोपड़ी में कुछ हो तभी, कल से चूल्हा नहीं सुलगाया। बच्चा खाने के लोभ में कहीं निकल गया है, बच्चा ही है दो दिन से फाका करना उसके लिए आसान नहीं।''[31] 'बसेरा' उपन्यास में निम्न वर्गीय रसूल मियां व उसके बच्चों द्वारा भूख को पानी पीकर मिटाने का चित्रण कर लेखक ने इस निम्न वर्गीय परिवार की आर्थिक तंगी का चित्रण निम्न उपन्यास पंक्तियों के द्वारा अभिव्यक्त किया है–'' रसूल मियां क्या कर रहे हैं, किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। ऐसा पहली बार नही हुआ, पिछले कई हफ्तों से बार–बार गरीबों के खाली पेट कुलबुला रहे थे। बच्चे भूख से चीख रहे थे और बड़े हैंडपंप का पानी पी–पीकर पेट की आग शांत कर रहे थे। रसूल मियां की स्थिति भी इस तरह बिगड़ जाएगी, इसका किसी को अनुमान भी नहीं था।''[32] 'बसेरा' उपन्यास में महानगरीय रिक्शा चालक निम्न वर्गीय 'रसूल मियां' की दयनीय आर्थिक कठिनाई का चित्रण करते हुए लेखक ने गरीबी के कारण त्रस्त रसूल मियां के मानसिक संत्रास को निम्न उपन्यास पंक्तियों में अभिव्यक्त किया है–''यह सब सुनना रसूल मियां के लिए असहनीय होने लगा। अनंत की तरफ उठे उसके

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

दोनों हाथ और आँखे तारों भरे आसमान पर फिर से टिक गए। ''भात न मिले तो कई रातें बीत गई ईश्वर! मेरे भात से भरी थाली को तुमने आसमान में क्यों बिखेर दिया।'' पके हुए भात का एक–एक दाना उसको मुँह चिढ़ाने लगा। वह अपने आप से कहने के अंदाज में बुदबुदाया, ''इतनी दूर से टिमटिमाकर क्यों खुशियां बिखेर रहे हो, देखो मेरी झोपड़ी पर उतर कर देखो, भूख और बदहाल से जिंदगी से त्रस्त बच्चे घर छोड़कर जा चुके हैं। अब सिर्फ शबाना बची है, उसे मुझसे अलग करने पर क्यों तुले हो।''[33] 'बसेरा' उपन्यास में निम्न वर्गीय लोगों द्वारा कोठियों में काम करना व कोठी वालों द्वारा फैके गए सब्जी के छिलकों का उन गरीब लोगों द्वारा पेट भरने का चित्रण कर लेखक ने उनकी आर्थिक दुर्दशा का चित्रण निम्न उपन्यास पंक्तियों के माध्यम से किया है–''मुस्तफा ने अपनी धुआंई आंखों को शायद पोंछने का प्रयास किया और बताया, ''दिन में किसी कोठी से नजमा मटर के छिलके उठा लाई थी, उन्हें उबालकर पानी को छौंक दिया है। शबाना छिलके तो खा नहीं सकेगी।''

''मैं भी देख लूं अपने यहां।'' अर्जुन साहू ने अपना प्रस्ताव रखा। ''क्या बना सकती है तुम्हारी बेगम!'' मुस्तफा ने पूछा। ''वह भी गोभी के डण्ठल उठाकर ले आई थी, बता रही थी उसकी कोठी की मालकिन भी अजीब औरत है। उससे पूछ रही थी कि डंठल क्यों उठाकर ले जा रही हो ? इनका क्या करोगी ? गाय आयेगी तो मैं उसे खिलाऊँगी। उसे ऐसा किसी ज्ञानी पंडित ने कहा है, फिर भी वो उठा कर ले आई मैंने भी उन्ही डंठलों को छीलकर जरा ज्यादा पानी में उबालने को कह रखा था।''[34] 'बसेरा' उपन्यास में जब अजीत सरकार की किडनी धोखे से उच्च वर्ग के द्वारा निकाल ली जाती है तब मुस्तफा इसके खिलाफ आवाज उठाता है तो पुलिस द्वारा कोर्ट–कचहरी में बयान देने को कहा जाता है तो मुस्तफा पुलिस के सामने अपनी व अपने साथियेां की आर्थिक कठिनाई का जिक्र करता है । जो लेखक ने निम्न पंक्तियों में बयां किया है–''हम फजीहत नहीं चाहते साहब! न हम कोर्ट–कचहरी को जानते हैं। हमारा उनसे कोई वास्ता भी नहीं हैं। जब हम लोगों के पास खाने को नहीं होता, कोर्ट–कचहरी कैसे जाएंगे और सरकार से हम कैसे भिड़ सकते हैं? हम तो यह कहने आये हैं, अजीत हम सब का प्यार था। भाई था, उसके साथ धोखा हुआ।''[35] 'मछरंगा' कहानी संग्रह के 'लेक जायेंगे साहब' कहानी में लेखक ने एक शहरी निम्न वर्गीय रिक्शा चालक की आर्थिक कठिनाई का चित्रण निम्न पंक्तियों द्वारा व्यक्त किया है–''रिक्शा किराये का है क्या ?'' ''ये रिक्शा तो अपना है। किराये का बहुत पहले ही छोड़ दिये हैं।'' ''कितना कमा लेते हो?''

''गुजारा चला लेते हैं साहब! ये पेट तो अपना है न साहब! इसको जैसी भी आदत में डालों, एक रोटी या चार की। बस पेट भरे हैं। ज्यादा भाग–दौड़ नहीं न साहब––– आराम से जितना मिल जाय बस ––––।''[36] 'चाँदनी पर' नामक कहानी में 'भज्जू' नामक निम्न वर्गीय पात्र की आर्थिक कठिनाई का चित्रण लेखक ने निम्न कहानी पंक्तियों के माध्यम से किया है–''घर क्या हुआ पतनाले की मुँडेर पर चार ईटों की दीवार उठवा दी थी। हफ्ते–भर के खून–पसीने से दो गज काला प्लास्टिक शीट वह खरीद कर लाया था। उसकी चाँदनी बनवा दी थी। चाँदनी क्या एक तरह से छत हुई। उसी के नीचे वह खुली टाँग सो जाता था। जब उसने वह झोपड़ी बनायी थी बहुत खुश हुआ था कि फिलहाल सिर छुपाने के लिए यह ठीक है।''[37]

(ख) अंधविश्वास,रूढ़िवादिता ÷ हरिसुमन बिष्ट ने महानगरीय निम्न वर्ग में व्याप्त अंधविश्वास और रूढ़ियों का चित्रण भी किया है। 'बसेरा' उपन्यास में लेखक ने महानगरीय निम्न वर्ग में प्रचलित भूत, प्रेतात्मा आदि विषयक अंधविश्वास का चित्रण मुस्तफा नामक पात्र के माध्यम से किया है–''दरोगा ठीक कह रहा था साहब! बच्चे को धरती ने नहीं खाया, काई आत्मा ही उसे उठाकर ले गई होगी। मुस्तफा ने कई बार देखा था उस आत्मा को।'' भीड़ में से किसी ने कहा।''[38] 'बसेरा' उपन्यास में लेखक द्वारा निम्न वर्गीय व्यक्तियों द्वारा अपने रहने के स्थान पर पहले कब्रिस्तान होने के कारण बच्चों के गायब होने पर शंका व्यक्त करने का चित्रण कर उन व्यक्तियों की रूढ़िवादिता को उल्लेखित किया है–''हां साहब! यह मुस्तफा ठीक कह रहा है। यह इलाका पहले से ही.....।'' भीड़ में खड़ा व्यक्ति बोला।

''क्या कहा? साफ–साफ कहो न।'' उस आदमी ने पूछा। ''कब्रिस्तान है साहब.....'' मुस्तफा कुछ बताता, उससे पहले अर्जुन साहू ने उसका वाक्य पूरा कर दिया।''[39]

निम्न वर्ग के अंतर्गत हरिसमुन ने ग्रामीण एवं महानगरीय निम्न वर्ग के सामने आने वाले आर्थिक कठिनाईयों, संत्रास, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता आदि विश्वासों का उल्लेख किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. वही, वही, पृ0–27
2. वही, वही, पृ0–78
3. वही, वही, पृ0–96
4. वही, वही, पृ0–97
5. वही, वही, पृ0–98
6. वही, आग और अन्य कहानियाँ, पृ0–13

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

7. वही, वही, पृ0–19
8. वही, वही, पृ0–21–22
9. वही, वही, पृ0–26
10. वही, वही, पृ0–68
11. वही, बिजूका, पृ0–114
12. वही, आसमन झुक रहा है, पृ0–36
13. वही, वही, पृ0–8
14. वही, वही, पृ0–63
15. वही, वही, पृ0–95
16. वही, वही, पृ0–96
17. वही, होना पहाड़, पृ0–74
18. वही, आग और अन्य कहानियां, पृ0–25
19. वही, वही, पृ0–26
20. वही, वही, पृ0–8
21. वही, वही, पृ0–9
22. वही, वही, पृ0–3
23. वही, आसमान झुक रहा है, पृ0–16
24. वही, बसेरा, पृ0–10
25. वही, वही, पृ0–24
26. वही, वही, पृ0–27
27. वही, वही, पृ0–30
28. वही, वही, पृ0–32
29. वही, वही, पृ0–39
30. वही, वही, पृ0–67
31. वही, वही, पृ0–68
32. वही, वही, पृ0–69
33. वही, वही, पृ0–73
34. वही, वही, पृ0–75
35. वही, वही, पृ0–121–122
36. वही, वही, पृ0–12
37. वही, वही, पृ0–37
38. वही, वही, पृ0–64
39. वही, वही, पृ0–70